B.A. PART - 1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय पत्र
मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य भाग-2

प्रश्न :- रीतिबद्ध काव्य की प्रवृत्तियाँ बतायें।

शेष उत्तर :-

(4) शृंगारिकता :-

रीतिकाल में शृंगार की प्रधानता रही है। रीतिबद्ध, रीतिमुक्त एवं रीतिसिद्ध तीनों वर्गों के कवियों ने शृंगार निरूपण पर विशेष ध्यान दिया है। राजदरबार में रहने वाले ये कवि राजा-नवाबों की विलासवृत्ति को उत्तेजित करने के लिए शृंगारी रचनाएँ करने में गौरव का अनुभव करते थे। रीतिबद्ध कवियों ने नायिका भेद के अन्तर्गत शृंगारी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। इसके अतिरिक्त नायिकाओं के हाव-भाव के विभिन्न भेदोपभेदों के लक्षण और उदाहरण प्रस्तुत करते समय शृंगारी रचनाओं को प्रमुखता मिली। रस विवेचन में इन्होंने रसराज शृंगार के विविध पक्षों का उद्घाटन सूक्ष्मता से किया। रीतिकाल में शृंगार की प्रमुखता तत्कालीन युग की देन है। इनमुक्त प्रेम की अभिव्यक्ति एवं नायक-नायिकाओं की विलासपूर्ण काम-क्रीड़ाएँ तत्कालीन रीतिबद्ध कवियों की विषय-वस्तु बनी हैं। नारी को भोग की वस्तु बनाकर तथा परकीया प्रेम को गौरवपूर्ण स्थान देकर रीतिकालीन कवियों ने समाज में नारी की हेय स्थिति को दिखाया है।

शृंगार रस निरूपक रीतिबद्ध कवियों में मतिराम सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। इन्होंने अपने ग्रंथ 'रसराज' में शृंगार रस और आलम्बन नायक-नायिका का विस्तृत विवेचन किया है।

(5) अलंकार विवेचन की प्रमुखता :-

रीतिबद्ध कवियों ने जितने अलँकार ग्रंथ लिखे, उतने संभवतः संस्कृत काव्यशास्त्र में भी नहीं लिखे गये। अपनी काव्य-प्रतिभा का परिचय देने के लिए अधिकांश रीतिग्रंथकारों ने

अलंकार ग्रंथों का प्रणयन किया। अलंकार विवेचन के लिए इन रीतिग्रंथकारों ने प्रायः संस्कृत आचार्य जयदेव के 'चन्द्रालोक' एवं अप्पय दीक्षित के 'कुवलयानंद' का आधार ग्रहण किया है। अलंकार निरूपक आचार्यों में प्रमुख हैं- महाराज जसवंत सिंह (भाषा-भूषण), मतिराम- (ललितललाम, अलंकार पंचाशिका), भूषण- (शिवराज भूषण), पद्माकर (पद्माभरण) आदि।

रीतिकाल के इन अलंकारवादी आचार्यों ने अलंकारों के लक्षण, उदाहरण प्रस्तुत करते हुए शब्दालंकारों, अर्थालंकारों का पर्याप्त विवेचन किया है। कुछ कवियों के द्वारा दिये गये लक्षण एवं उदाहरण अत्यंत सरल एवं सरस बन पड़े हैं जब कि कुछ अन्य कवियों के लक्षण भी भ्रामक जान पड़ते हैं। अलंकारों की संख्या भी प्रायः सभी आचार्यों ने अलग-अलग मानकर तदनुसार विवेचन किया है।

(6) छंद विवेचन :-

पाठकों को कविता में प्रयुक्त होने वाले छंदों की जानकारी कराने के उद्देश्य से रीतिबद्ध कवियों ने छंद विवेचन करने हेतु रीतिग्रंथों की रचना की। परम्परा से चले आते हुए छंदों का विवेचन करने के साथ-साथ कुछ नये छंदों का विवेचन भी इन कवियों ने किया है। छंद विवेचन के लिए इन्होंने प्रायः 'प्राकृत पैंगलम' और 'वृत्तरत्नाकर' नामक ग्रंथों का आधार लिया है। दोनों में छंद का लक्षण देकर उसके उदाहरण स्वरचित राजप्रशस्ति करते हुए दिये गये हैं। इस प्रकार की गयी रचनाओं में 'छंद-निर्वाह' पर विशेष ध्यान दिया गया है।

छंद निरूपक रीति कवियों में प्रमुख हैं — मुरलीधर भूषण (छन्दोहृदय प्रकाश), मतिराम - (वृत्त कौमुदी), सुखदेव मिश्र - (वृत्तविचार, ~~छंदोविचार~~ छंदोविचार), रामसहाय - (वृत्त तटंकिणी) आदि।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि हिन्दी के रीतिबद्ध कवियों ने हिन्दी में काव्यशास्त्र का द्वार खोलने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने काव्य-रसिकों को काव्यांगों की सामान्य जानकारी प्रदान कर काव्य के प्रति लोगों के रुझान को बढ़ाने का प्रशंसनीय कार्य किया।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

(1) प्रश्न- रीतिबद्ध काव्य से क्या अभिप्राय है? रीतिबद्ध काव्य की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालें?

(2) प्रश्न:- रीतिबद्ध काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिए?

(3) प्रश्न:- हिन्दी के प्रमुख रीतिबद्ध कवियों का परिचयात्मक विवरण देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं के नाम लिखें?

(4) प्रश्न:- रीतिबद्ध कविता के गुण-दोषों की विवेचना कीजिए?

(5) प्रश्न:- "रीतिबद्ध कवियों का प्रमुख उद्देश्य पाण्डित्य प्रदर्शन था" इस कथन की समीक्षा कीजिए?

पता:
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C)
मो० नं०- 7909046087
दिनांक - 25.01.2022